DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-1 ,UNIT-9,
PERSONALITY:TYPE APPROACH

LECTURE-34

प्रकार उपागम

(TYPE APPROACH)

व्यक्तित्व का सबसे पुराना सिद्धांत प्रकार सिद्धांत है |इस सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति को ख़ास-ख़ास प्रकार में बांटा जाता है और उसके आधार पर शीलगुणों का वर्णन किया जाता है |

मार्गन ,किंग, बिस्ज तथा स्कोप्लर (1986) के अनुसार

व्यक्तित्व के प्रकार (TYPE) से तात्पर्य "व्यक्तियों के एक ऐसे वर्ग से होता है जिसके गुण एकदूसरे से मिलते-जुलते है |जैसे –अंतर्मुखी (INTROVERT)एक प्रकार है और जिन व्यक्तियों को इसमें रखा जाता है उनमे कुछ सामान्य गुण जैसे-

संकोचशीलता,सामाजिक कार्यो में अरुचि ,लोगों से कम बोलना या मिलना-जुलना आदि पाया जाता है |

यदि व्यक्तित्व के अध्ययन के इतिहास पर ध्यान दिया जाए तो यह स्पष्ट हो जायेगा की सबसे पहला प्रकार सिद्धांत (TYPE THEORY)हिपोक्रेट्स ने 400BC में प्रतिपादित किया था |उन्होंने शरीर – द्रवों के आधार पर व्यक्तित्व के चार प्रकार बतलाये है |इनके अनुसार हमारे शरीर में चार मुख्य द्रव पाए जाते है | पीला पित्त ,काला पित्त ,रक्त तथा कफ या श्लेष्मा |प्रत्येक व्यक्ति में इन चारो द्रवों में से कोई एक द्रव अधिक प्रधान होता है और व्यक्ति का स्वभाव या चित्तप्रकृति इसी की प्रधानता से निर्धारित होता है |जिस व्यक्ति में पीले पित्त की प्रधानता होती है ,उस व्यक्ति का चित्तप्रकृति या स्वभाव चिड़-चिड़ा होता है और व्यक्ति प्रायः बैचेन दिख पड़ता है| ऐसे व्यक्ति तुनुक मिजाजी भी होते है | इस तरह के 'प्रकार'(TYPE) को हिपोक्रेट्स ने 'गुस्सेल' कहा है |जब व्यक्ति में काले पित्त की प्रधानता होती है ,तो वह प्रायः उदास या मंदित नज़र आता है |इस तरह के प्रकार को विषादी या निराशावादी कहा गया है | जिस व्यक्ति में अन्य द्रवों की अपेक्षा रक्त की प्रधानता होती है ,वह प्रसन्न तथा खुशमिजाज होता है |इस तरह के व्यक्तित्व के प्रकार को 'उत्साही' या 'आशावादी' कहा गया है |जिस व्यक्ति में कफ या

श्लेष्मा जैसे द्रव की प्रधानता होती है ,वह शांत स्वभाव का होता है तथा उसमे निष्क्रयता अधिक पायी जाती है |इसमें भावशून्यता के गुण भी पाए जाते है |इस तरह के व्यक्तित्व के प्रकार को विरक्त कहा गया |

यद्दपि हिपोक्रेट्स का यह प्रकार सिद्धांत अपने समय का एक काफी महत्वपूर्ण सिद्धांत था ,फिर भी आज के मनोवैज्ञानिकों द्वारा उसे पूर्णतः अस्वीकृत कर दिया गया |

आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा इस प्रकार से सिद्धांत को मूलतः दो भागो में बाँट कर उनके द्वारा व्यक्तित्व की व्याख्या की गयी |पहले भाग में व्यक्ति के शारीरिक गुणों एवं उसके चित्तप्रकृति या स्वभाव के संबंधो पर बल डाला गया है तथा दुसरे भाग में व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर उसे भिन्न भिन्न प्रकारों में बाँट कर अध्ययन किया गया है |इस प्रकार इस सिद्धांत के इन दोनों भागो का वर्णन निम्नलिखित है –

1. **शारीरिक गुणों के आधार पर**–शारीरिक गुणों के आधार पर प्रतिपादित सिद्धांत को शरीरगठन सिद्धांत कहा गया है |शारीरिक गुणों के आधार पर दो वैज्ञानिकों अर्थात क्रेश्मर

तथा शेल्डन द्वारा किया गया व्यक्तित्व का वर्गीकरण काफी महत्वपूर्ण है|

इन दोनों मनोवैज्ञानिकों के अनुसार व्यक्तित्व के चार प्रकार बतलाये गए है –

(I) **स्थूलकाय प्रकार (PYKNIC TYPE)** – ऐसे व्यक्ति का व्यक्तित्व कद छोटा ,शरीर भारी एवं गोलाकार ,गर्दन छोटी एवं मोती होती है | ऐसे व्यक्ति सामाजिक होते है तथा खाने-पीने तथा सोने में काफी मजा लेते है एवं खुश मिजाज होते है |

(II) **कृशकाय प्रकार (ASTHENIC TYPE)-** इस तरह के व्यक्ति का कद लम्बा , शरीर दुबला-पतला ,वजन उम्र के अनुसार होने वाले सामान्य वजन से कम होता है |ऐसे लोगो का स्वभाव कुछ चिड़-चिड़ा होता है ,सामाजिक उत्तरदायित्व इनमे नहीं देखा जाता है तथा ये काल्पनिक दुनिया में भ्रमण करते है |

(III) **पुष्टकाय प्रकार (ATHLETIC TYPE)-** इस प्रकार के व्यक्ति के शरीर की मांसपेशिया काफी विकसित एवं गठीला होता है |शारीरिक कद न तो अधिक लम्बा और न ही अधिक मोटा होता है |इनका पूरा शरीर सुडौल एवं हर

तरह से संतुलित दिखाई देता है |ऐसे व्यक्ति के स्वभाव में न तो अधिक चंचलता और न ही अधिक मंदन होता है | ऐसे व्यक्ति बदली हुयी परिस्थिति से आसानी से समायोजन कर लेता है| अतः इन्हें सामाजिक प्रतिष्ठा काफी मिलती है |

(IV) **विशालकाय प्रकार (DYSPLASTIC TYPE)-** इस श्रेणी में उन व्यक्तियों को रखा जाता है जिनमे ऊपर के तीन प्रकारों में से किसी भी प्रकार का स्पष्ट गुण नहीं मिलता है बल्कि इन तीनो प्रकार का गुण मिलता-जुलता होता है |

2. **मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर** – कुछ मनोवैज्ञानिकों ने व्यक्तित्व का वर्गीकरण मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर किया है |इसमें युंग ,आइजिंक तथा गिलफोर्ड का नाम अधिक मशहूर है | युंग ने व्यक्तित्व के निम्नांकित दो प्रकार बतलाये है –

(I) **बहिर्मुखी (EXTROVERT)** –इस तरह के व्यक्ति की अभिरुचि विशेषकर समाज के कार्यो की ओर होता है | वह अन्य लोगो से मिलना-जुलना पसंद करता है तथा प्रायः खुश-मिजाज होता है | ऐसे व्यक्ति आशावादी होता है तथा अपना सम्बन्ध यथार्थतः से अधिक और आदर्शवाद से कम रखते है | ऐसे लोगो को खाने-पिने

की अधिक अभिरुचि होती है | ऐसे लोग समाज के लिए काफी उपयोगी होते है |

(II) **अंतर्मुखी (INTROVERT)** – ऐसे व्यक्ति में बहिर्मुखी के विपरीत गुण पाए जाते है | इस तरह के व्यक्ति लोगो से मिलना-जुलना बहुत पसंद नहीं करते है और उनकी दोस्ती कुछ ही लोगो तक सीमित होती है |इनमे आत्मकेन्द्रिता का गुण अधिक पाया जाता है | इन व्यक्तियों को अकेलापन अधिक पसंद होता है तथा ऐसे लोग रुढ़िवादी प्रकृति के होते है तथा पुराने रीती-रिवाजों एवं नियमो को आदर नहीं देते है |आधुनिक मनोवैज्ञानिकों द्वारा युंग के इन दो प्रकारों की आलोचना की गयी है |इन लोगो ने कहा है की सभी लोग इन दोनों में से किसी एक श्रेणी में आए यह जरुरी नहीं है | अधिकतर लोगो में इन दोनों श्रेणियों के गुण पाए जाते है | फलस्वरूप एक परिस्थिति में वे बहिर्मुखी के रूप में व्यवहार करते है तथा दूसरी परिस्थिति में वे अन्तर्मुखी के रूप में व्यवहार करते है | ऐसे व्यक्तियों को उभयमुखी की संज्ञा दी है | आइजेंक (1947) ने युंग के अंतर्मुखी-बहिर्मुखी सिद्धांत की सत्यता की जांच करने के लिए 10000

सामान्य एवं तंत्रिका रोगियों पर अध्ययन किया और विशेष सांख्यिकीय विश्लेषण कर यह बतलाया की व्यक्तित्व के निम्नांकित तीन प्रकार होते है जो bipolar है –

(i) **अंतर्मुखी-बहिर्मुखी** --- अंतर्मुखता-बहिर्मुखता दोनों को आइजेंक ने व्यक्ति का एक ही प्रकार या बीमा माना है जो स्पष्टतः bipolar है जैसे – किसी व्यक्ति में सामाजिकता अधिक है तथा वह लोगों से मिलना-जुलना अधिक पसंद करता है तो यह कहा जाता है की व्यक्ति इस बीमा के बहिर्मुखता पक्ष में ऊंचा है | दूसरी तरफ यदि व्यक्ति अधिक पसंद करता है ,लजालू तथा संकोचशील भी है तो ऐसा कहा जाता है की ऐसा व्यक्ति इस बीमा के अंतर्मुखता पक्ष में अधिक ऊंचा है |

(ii) **स्नायुविकृति – स्थिरता** – आइजेंक के अनुसार व्यक्तित्व का यह दूसरा प्रमुख प्रकार है | व्यक्तित्व के इस प्रकार के पहले छोर पर व्यक्ति में सम्वेगिक नियंत्रण कम होता है तथा उनकी इच्छाशक्ति कम होती है | इनके विचारों एवं क्रियाओं में मंदता पायी जाती है | इनमे अन्य व्यक्तियों के सुझाव को चुप-

चाप स्वीकार कर लेने की प्रवृति अधिक होती है | तथा इनमे सामाजिकता का अभाव पाया जाता है |

(iii) **मनोविकृतिता –पराहं की क्रियाएँ** – आइजेंक (1952) ने व्यक्तित्व के इस प्रकार को बाद में किये गए शोध के आधार पर जोड़ा है | आइजेंक ने इस प्रकार की व्याख्या करते हुए कहा की व्यक्तित्व का यह 'प्रकार' मानसिक रोगी की एक विशेष श्रेणी जिसे मनोविकृति कहा जाता है ,के तुल्य के गुण अधिक होंगे , आइजेंक (1952) के अनुसार मनोविकृति वाले व्यक्तित्व के 'प्रकार' में क्षीण एकाग्रता ,क्षीण स्मृति तथा क्रूरता का गुण अधिक होता है | इसके आलावा ऐसे व्यक्ति में असंवेदनशील ,दूसरो के प्रति सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध की कमी किसी प्रकार के खतरे के प्रति असतर्कता ,सृजनात्मकता की कमी आदि गुण पाए जाते है | इस प्रकार के दुसरे छोड़ पर पराहं की क्रियाएं होती है | जैसे –जैसे इस छोड़ की और हम बढ़ते है ,उक्त लक्षणों या व्यहारों की मात्रा घटती जाती है तथा व्यक्ति में आदर्शत्व तथा नैतिकता की मात्रा बढती जाती है |

ऊपर के विवरण से स्पष्ट है की व्यक्तित्व के प्रकार सिद्धांत में व्यक्तित्व के सामान शीलगुणों को एक साथ मिला कर एक विशेष 'प्रकार' का निर्माण किया जाता है और उसी विशेष 'प्रकार' के अनुसार व्यक्तित्व की व्याख्या की जाती है |इस सिद्धांत की सबसे बड़ी विशेषता यह रही है की इसमें व्यक्तित्व को एक संगठित एवं समग्र रूप से अध्ययन करने का प्रयास किया गया है |